शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 13 | उदयपुर मंगलवार 01 अगस्त 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मीरां के गुरु रैदास राजस्थान के

संदर्भ : *मीरा स्मृति शोध संस्थान चित्तौड़गढ़ से प्रकाशित मीरायन जून-अगस्त 2017 अंक का सम्पादकीय चित्तौड़ में निर्माणाधीन रैदास पेनोरमा के औचित्य पर प्रश्नचिन्ह।*

– सन्त रैदासजी की जीवनी से ज्ञात होता है कि उनका जन्म माघ सुदी पूर्णिमा वि. सं. 1433 को काशी में हुआ। काशी ही उनका कार्यक्षेत्र एवं साधना स्थली रहा तथा 130 वर्ष की उम्र में वि. स. 1563 में उनका शरीरान्त भी काशी में हुआ। इसका अर्थ यह है कि चित्तौड़गढ़ न तो रैदासजी की जन्मस्थली है, न साधनास्थली और न ही उनका निर्वाण-स्थल है।

– रैदासजी को चित्तौड़गढ़ के इतिहास, संस्कृति और धार्मिक महत्त्व से जुड़ी विभूति मानना चित्तौड़गढ़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति अन्याय होगा।

– मीरां माधुरी के लेखक बनारस निवासी ब्रजरत्नदास, मीरां : जीवन और काव्य के लेखक डॉ. सी. एल. प्रभात तथा मीरांबाई : प्रामाणिक जीवनी एवं मूल पदावली के लेखक ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल ने इन पदों पर गहन विचार कर इन्हें अप्रामाणिक करार दिया है।

– स्पष्ट है कि रैदास एवं मीरां के मध्य गुरु-शिष्य सम्बंध की सम्पूर्ण कहानी निराधार और किसी विशेष मन्तव्य से गढ़ी गई है। राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष महोदय का यह तर्क कि चित्तौड़ में निर्माणाधीन रैदास पेनोरमा बनाने के निर्णय का आधार मीरां का रैदास की शिष्या होना है, पूर्णत: निराधार है।

– अत: इस पेनोरमा का नामकरण सन्त रैदास के बजाय चित्तौड़ के इतिहास, संस्कृति एवं धार्मिक महत्व से जुड़ी किसी महान विभूति के नाम पर किया जाना चाहिये, जिससे चित्तौड़ की विरासत के प्रस्तुतीकरण को प्रामाणिकता प्रदान की जा सके।

– सम्पादकीय से

लेखन इतिहासकारों का हो या अन्य विद्वानों का, हर समय शोध को बढ़ावा देने वाला हो न कि अन्तिम निष्कर्ष देने वाला। यदि हम किसी निष्कर्ष पर दृढ़ रहेंगे तो गफलत में रहेंगे साथ ही शोधानुसंधान की प्रवृत्ति पर विराम लगाने जैसा अपराधिक कार्य करेंगे। इससे गुटबंदी को प्रोत्साहन मिलेगा। आशा की जानी चाहिए कि वे इसे गंभीरता से लेंगे और अपने दायरे से बाहर को भी अपनी बड़ी आँखों से देखेंगे।

पहले तो इस भ्रम को दूर कर लें कि जिस रैदास को विद्वान लोग काशी का बता रहे हैं वह रैदास अलग है, दूसरा है। मीरां का गुरु नहीं है। मीरां के गुरु जिस रैदास की बात सर्वत्र जगजाहिर है वह राजस्थान का ही था। उसका जन्म जोधपुर जिले के पीपलोदा गांव में हुआ था जो वर्तमान में पीपाड़ नाम से जाना जाता है।

रैदास नीची जाति के, काले कलूटे, ऊंची धोती तथा मोटे कपड़े की अंगरखी पहनते थे। अति साधारण स्थिति लिए बस्ती के बाहर लूनी नदी के किनारे घासफूस की बनी मामूली झोंपड़ी में रहते थे जहां आज रेत का टीला खड़ा है। इनका चलता नाम रोहीड़ा था।

भोजराज की मृत्यु के बाद मीरां अचानक चित्तौड़ से निकल नीमच, नागदा, रतलाम, थांदला, झाबुआ, राजगढ़, धार, मांडू, उज्जैन होती हुई डाकोर पहुंची। उसकी दोनों दासियां भी उसके साथ रहीं। यहीं मीरां ने रैदास को अपना गुरु बनाया। गुरु बनने पर रैदास ने मीरां को इकतारा भेंट किया। इसके अलावा वे पांव में पहनने की सपाटियां भी देना चाहते थे पर मीरां ने मना कर दिया। किसी से सुन रखा था कि तुलसीमाला पहने व्यक्ति के खाल नहीं अड़नी चाहिए इसीलिए मीरां ने जूतियां भी नहीं पहनीं।

मीरां ने गुरु-दक्षिणा में तुलसीमाला दी। यह घटना संवत् 1634 आसाड़ी गुरु पूर्णिमा के दिन की थी। रैदास मीरां के सदैव वाट गुरु अर्थात् राह गुरु बने रहे। द्वारिका में समुद्रनारायण मंदिर के पास रैदास झोंपड़ी बनाकर रहने लगे। इसी मंदिर से मीरां ने समुद्र समर्पण किया। रैदास भी मारे गये। दोनों की अकाल मौत हुई।

विद्वान असलियत का पता लगाने इन स्थानों का भ्रमण करें। वहां के स्थानों का बारीकी से निरीक्षण करें। लोगों से पूछताछ करें। कंठासीन श्रुतियों, मिथकों, कथा-किस्सों से अपने अनुभवजनित ज्ञान द्वारा निष्कर्ष निकालें। उन्हें लगेगा कि पोथी-पानड़ियों में लिखे तथ्य और जनजीवन में प्रचलित सत्य में कितना अन्तर तथा गहरे पानी की पैठ है।

राखी पर श्रवण की याद

-डॉ. तुक्तक भानावत-

राखी अर्थात रक्षाबंधन मुख्यत: भाई- बहन का त्योहार है। इसका संबंध भाई द्वारा बहन की रक्षा से है। रक्षा का प्रतीक वह धागा है जिसे बहन भाई की कलाई पर बांधती है।

इसका संबंध उस श्रवण से भी जुड़ गया है जो अपने अंधे माता-पिता को कावड़ में बिठाकर कई तीर्थों की यात्रा करवाता है। इसका भाव यह है कि पुत्र ऐसा हो जो अपने माता-पिता के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति रखता हो और अंत समय तक उनकी सेवा करता हो। इसीलिए राखी पर कई जगह श्रवण के नाम पर मेले भरते हैं।

श्रवण की एकनिष्ठ भक्ति के कारण लोकजीवन में माता-पिता के कहे को शिरोधार्य करने वाले पुत्र को 'सरवण पूत' कहकर पुकारा जाता है। राजस्थान का सरवण गांवों में हरवण कावड़िया के नाम से मशहूर है। प्राय: दरवाजे के दोनों ओर गेरु से लीपी भींत पर खड़िया याकि चावल के घोल से सरवण कोरे जाते हैं। भींत के इस चितरावण को लपसी, चावल, खीर

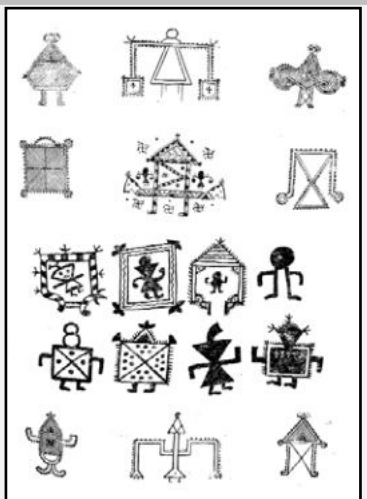

रक्षाबंधन पर श्रवण की विविध परिकल्पनाएं

अथवा मिष्ठान्न का भोग लगाया जाता है और रोली का टीका कर रक्षा-सूत्र राखी लगाई जाती है।

कहते हैं कि श्रवण की पत्नी श्रवण के माता-पिता के प्रति हमदर्द नहीं थी। वह उनके लिए भोजन में भी दूजभांत करती थी। श्रवण को उसकी इस चाल का पता लग गया। अत: उसने अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा कराने की सोची। वह एक कावड़ लाया और उसके दोनों पलड़ों में उन्हें बिठाकर चल दिया।

महीनों चलकर अयोध्या के निकट पहुंचा। एक दिन जब माता-पिता को प्यास लगी तो श्रवण सरयू के किनारे पहुंचा और पानी भरने को झुका ही था कि उधर से शिकार पर आ रहे राजा दशरथ ने जानवर समझ बाण चलाया जो श्रवण के जा लगा। बाण लगते ही श्रवण के मुंह से निकला- 'हतोराम / हतनोपुर गाम / सरवण म्हारो नाम।'

दशरथ यह सुन दौड़े-भागे वहां आए। जब देखा कि उन्होंने अपने ही भानजे का वध कर दिया तो वे उसके माता-पिता अर्थात् अपने बहिन-बहनोई के पास गए और क्षमा मांगी। अंधे दम्पत्ति पुत्र वियोग में फूट-फूट कर रोने लगे। उनके मुंह से निकल पड़ा- ' फिट रे दशरथ पाप कियो, भाणजो मार कांई जस लियो?' उन्होंने श्राप दिया- 'जिस अग्निबाण से तुमने हमारे लाड़ले श्रवण के प्राण हर लिये उसी तरह तुम भी अपने पुत्र-वियोग में प्राण त्यागोगे।'

जमीन पर बनाये जाने वाले मांडणें हों चाहे दीवाली पर कोरी जाने वाली चित्रावण हों, थापे हों या कि कागजों पर उकेरे जाने वाले पाठा चित्र हों, सबमें श्रवण के प्रतीक चिन्हों में कावड़धारक पुरूष को दिखाया जाता है।

उस कावड़ के दोनों पलड़ों में, एक में पुरूष और दूसरे में नारी-रूप में श्रवण के माता-पिता बैठे बताए जाते हैं। क्षेत्रीय एवं आंचलिकता के प्रभावानुसार श्रवण के अंकन बहुविधि स्थानीय रंगों से प्रभावित मिलते हैं। श्रवण के अंकनों में सरवण द्वारा अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा ले जाने का प्रसंग सर्वत्र मिलता है। इससे यह तो सर्व-स्पष्ट है कि लोकजीवन में श्रवण मातृ-पितृ भक्ति का प्रतीक समझा जाता है।

लेकिन अब रक्षाबंधन का यह स्वरूप बदलता जा रहा है। अब रक्षा-सूत्र कई तरह के तैयार होने लग गए हैं। इसे जितनी कल्पनाएं हों उतने रूप दिये जाने लग गए हैं और यह पूरा का पूरा एक व्यवसाय बन गया है। कीमती से कीमती राखियां तैयार होने लग गई हैं और उन धागों में फिल्मी स्टार से लेकर विभिन्न देवी-देवताओं, बच्चों के पसंदीदा कार्टून, टेटू आदि के चित्र लगा दिये जाते हैं।

सोने, चांदी के तारों से कई तरह की बुनावट वाली राखियां भी देखने को मिलती हैं। मोतियों, लालों, मणियों, छोटे-छोटे शंख, सीपियां वाली राखियां भी प्रचलन में हैं। वास्तु की दृष्टि से भी राखियों का बहुविध निर्माण होने लग गया है।

प्रसिद्धि है कि मेवाड़ के सलूम्बर कस्बे के पास तीर्थयात्री बने श्रवण ने विश्राम लिया था तब उसके अन्तर्ज्ञानी पिता ने भांप लिया था कि श्रवण के मन में उनके प्रति दुर्भाव आ गया है। कालान्तर में उस जगह जो गांव बसा वह 'सरवण कावेड़िया' नाम से आज भी उस याद का अस्तित्व लिए है।

खोज-खबर

गड्या देवरा

उदयपुर की प्राचीन बसावट वाले आज जो स्थल हैं उन्हें देखकर आश्चर्य होता है कारण कि आज उन स्थलों और उनके नामकरण से यह कल्पना नहीं की जा सकती। आज जहां आहाड़ नदी है वह तब बेड़च नाम से जानी जाती थी और राणा प्रतापनगर स्टेशन के पास जो मुख्य चौराहा है वह ठोकर चौराहे के नाम से प्रसिद्ध है वहां तब उदयसागर के बांध का पानी आता था जिसकी आते-जाते राहगीरों की ठोकर पड़ती थी इसीलिए उस चौराहे का यह नामकरण पड़ा। आज न तो वहां पानी है और न कोई ठोकर खाता है। ऐसे स्थलों के प्राचीन स्वरूप की जानकारी से ही उनकी सार्थकता सिद्ध होती है।

महाराणा कर्णसिंह ने बेड़च नदी के किनारे दो मंदिर बनवाये। उनमें से एक वर्तमान में गड्या देवरा तथा दूसरा हस्तिमाता का मंदिर है जो महाराणा भूपाल कॉलेज के पीछे चम्पाबाग के पास अवस्थित है। गड्या देवरा जगदीश चौक से पीछोला जाने के उतार में चांदपोल पुलिया के पास मुख्य सड़क के एक ओर भूमि से कोई पांच फीट नीचे है। भूमि के भीतर गड़ा होने के कारण इसका गड्या देवरा नाम पड़ा। इसके पीछे पीछोला का किनारा है जहां विविध घाट और मंदरियां बनी हुई हैं।

गड्ये देवरे का स्वरूप पूर्णत: मंदिर आकृति का है। इसके पुजारी शान्तिलाल ने 20 अप्रेल 1996 को एक भेंट के दौरान बताया कि पहले यहां नदी का बहाव था। पीछोला मांजी के मंदिर के दक्षिण में था। जो पानी अधिकता लिए था वह नदी रूप में बहकर जिसे आज गुमानियावाला नाला कहते हैं, वहां तक जाकर बेड़च (आहाड़) में मिलता था। इसी नदी पर महाराणा उदयसिंह ने उदयसागर का विशाल बांध बंधवाया जिसका पानी ठोकर चौराहे को छूता था। इतने बड़े जलप्लावन के कारण उदयसागर बांध को पूर्व दिशा की ओर कोने से नीचे करना पड़ा। शान्तिलाल के पिता, दादा भी गड्ये देवरे के पुजारी रह चुके हैं।

गड्या देवरा दरअसल शिव मंदिर है जिसका निर्माण महाराणा कर्णसिंह ने सन् 1620 में करवाया। तब नदी किनारे पर संगमरमर की सीढ़ियों द्वारा मंडप में पहुंचा जाता था। यहां पास ही तब श्मशान था जहां मृतक का दग्ध कर्म करने वाले दागिये नहाते थे। जिस घाट पर यह नहाना होता वह रोवण्ये घाट के नाम से आज भी अस्तित्व में है। मंदिर का अस्तित्व पूर्णत: समतल भूमि पर था। मंदिर में पूर्व के अलावा तीनों दिशाओं से प्रवेश था। तीन ओर से मंडप भी खुला था। पास ही दक्षिण-पश्चिम में बावड़ी थी जो आज भी है। पीछोला के विस्तार के साथ यह मंदिर भी सत्येश्वर महादेव के नाम से जाना गया परन्तु यह नाम नहीं चल पाया और आज भी गड्या देवरा के नाम से ही लोकप्रिय है।

अदालत में तांत्रिक

गोगुन्दा का भंवरलाल आमेटा बड़ा तांत्रिक था। अपने तांत्रिक प्रयोगों द्वारा आसपास के लोगों में उसने भय मिश्रित आतंक फैला रखा था। श्यामसन्दर व्यास (89) ने बताया कि उसके द्वारा एक हत्या भी हो गई थी जिसका उदयपुर की अदालत में केस चला। उसे जेल में डाल दिया गया।

कई पेशियों के बाद उसके आखिरी बयान लेने थे। सेशन जज प्यारेकिशन कौल थे। उनके सम्मुख भंवरलाल को हाजिर किया गया। कठगरे में खड़े भंवरलाल ने अपने बयान बलमबद्ध करवाये। जज साहब ने फैसला सुरक्षित रखा। भंवरलाल सारी स्थिति को भांप गया था कि वह अपराधी घोषित होगा और उसे जेल की हवा खानी पड़ेगी।

बयान के पश्चात उसने हाथ जोड़कर जज साहब को निवेदन किया- ''हजूर, मुझे ज्ञात है, आप मुझे जेल की सजा सुनायेंगे पर मेरा निवेदन सुन लीजिये कि जिन हाथों से आपने मेरी सजा लिखी है, उन्हीं हाथों से मुझे आपको मेरी सजा से बहाल करना पड़ेगा।'' जज साहब ने उसे सुना अनसुना कर दिया।

किसी ने भी भंवरलाल के कथन पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। प्रतिदिन की तरह संध्या को जज साहब अपने निवास पहुंचे। कुछ ही देर बाद अचानक उनके पेट में दर्द उठा। अप्रत्याशित उठे इस दर्द की पीड़ा धीरे-धीरे बढ़ती रही और असहनीय हो गई। उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। वहां थोड़ी देर राहत पाई तो उन्हें दिन को अदालत में भंवरलाल का कथन याद हो आया।

उन्होंने सारी घटना अपनी पत्नी को कह सुनाई। पत्नी ने तत्काल वरिष्ठ बाबू को बुलवाया और उसे सारी घटना की समझाइश देकर जेलर भूरालाल से मिल कर कैदी भंवरलाल से सम्पर्क करने को कहा। बाबू तत्काल जेल पहुंचा और भूरालालजी जेलर साहब से सम्पर्क किया जिन्होंने स्वयं साथ रहकर कैदी भंवरलाल से भेंट कराई।

भंवरलाल तो जानता ही था कि उसकी करामात का जज साहब पर क्या असर होगा। उसने तत्काल सारी बात सुन कहा कि यह करामात तो मेरी ही है। अब तो एकमात्र यही उपाय है कि जज साहब से मेरी सजा लिखा वह कागज फड़वादें। इधर मेरी सजा बहाल होगी, उधर जज साहब अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त कर लेंगे।

बाबू बड़ा उल्लास लिए अस्पताल पहुंचा। सारी घटना कह सुनाई। इस पर कहते हैं, जज साहब तत्काल वहां से अपने ऑफिस पहुंचे। भंवरलाल का निर्णय लिखा कागज हटाया। कागज हटाते ही उन्हें आराम मिला और वे चंगे होकर घर लौटे।

-म. भा.

स्मृतियों के शिखर (35) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकदेवता कल्लाजी के सेवक सरजुदासजी

सन् 1980 के सितम्बर माह में पहलीबार उदयपुर में मैंने अपने भाणजी-जंवाई श्री रोशनलालजी बाबेल के हिरणमगरी सेक्टर 4 स्थित निवास पर कल्लाजी के भाव-रूप में सरजुदासजी वैष्णव के दर्शन किए। कई लोगों की उपस्थिति में मैं सबके अंत में जाकर चुपचाप बैठ गया किन्तु कुछ ही समय में मुझे उन देवता ने अपने पास बुला लिया। पूछा कि मैं क्या चाह लिये यहां आया हूं। मैंने बताया कि सुधाजी (डॉ. सुधा गुप्ता) मुझे यहां आपके दर्शनार्थ लाई हैं। मेरी कोई समस्या नहीं है और न ही कोई चाह ही है। मैं तो लेखक हूं सो लिखता रहूं लेकिन, यदि आपकी कृपा हो जाय तो मैं मीरांबाई पर प्रामाणिक जीवनी लिखना चाहूंगा जिसका मैं सर्वथा अभाव महसूस कर रहा हूं।

मेरा यह विनम्र कथन मेरे लिए वरदान सिद्ध होगा, ऐसी मुझे आशा नहीं थी किन्तु वह सब संभव हुआ। कल्लाजी ने सन् 1982 से लेकर सन् 1987 तक राजस्थान के अतिरिक्त गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के उन कई स्थानों की यात्रा कराई जहां-जहां मीरांबाई का परिभ्रमण हुआ।

माध्यम थे श्री सरजुदासजी वैष्णव जो कल्लाजी के लिए अहर्निश समर्पित संत-सेवक थे। इन्हें न केवल कल्लाजी का भाव होता बल्कि कल्लाजी के सेनापति के रूप में रह रहे राजा मानसिंहजी का भाव भी होता। मीरांबाई की इस खोज-यात्रा में मानसिंहजी भी सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहे। सरजुदासजी को छोटे-बड़े सभी 'बापूजी' नाम से संबोधित करते थे।

उन्होंने मुझे न केवल आशीर्वाद दिया अपितु मेरी चाह के अनुसार चित्तौड़ के किले पर प्रतिवर्ष लगनेवाला भूतों का मेला दिखाया। यह दिन 15 नवंबर 1982 की दीवाली का था। इस वर्ष दो दीवाली पड़ी। दोनों दीवाली पर यह अदृश्य मेला भरा। अपने अंतर्चक्षुओं से देखा गया यह मेला अद्‌भुत, अलौकिक और अविस्मरणीय रहा।

इसी किले पर एक और मेला बैकुंठ चतुर्दशी 1984 को दिखाया। यह मेला दिव्य आत्माओं का था। जो आत्माएं सद्‌गति में हैं वे सब इस मेले में सम्मिलित होती हैं। जितने भी अच्छे संत, सतियां, महापुरूष हुए हैं वे सब सम्मिलित होते हैं। महाराणा मोकल के समय से इस मेले का प्रारंभ हुआ तब से यह निरन्तर प्रतिवर्ष आयोजित होता आ रहा है। इस मेले में जननी जोगमाया सबको काम की जिम्मेदारी सौंपती है और पिछले वर्ष दिये गए कार्यों का लेखाजोखा करती है। ऐसे मेले और भी लगते हैं। कहीं एकादशी को, कहीं पूर्णिमा को।

बचपन में ही सरजुदासजी के माता-पिता चल बसे। अत: वे कुछ पढ़-लिख भी नहीं पाये। जब उनका विवाह हुआ तब उनके श्वसुरजी ने शादी में उन्हें तुलसीकृत रामचरित्त मानस की प्रति दी। उसी से उन्होंने मामूली पढ़ना-लिखना सीखा। मिलेट्री में नौकरी की तब भी हस्ताक्षर नहीं कर वे अंगूठा ही लगाते रहे।

सरजुदासजी का प्रारंभिक जीवन बड़ी साधना व तपस्या में बीता। तीन वर्ष बांसवाड़ा के घने जंगलों में व्यतीत किये तब बिल-पत्र बांट कर उनका एक गिलास पानी प्रतिदिन पीते। यही उनका आहार रहता। शरीर पर कुछ नहीं पहन कर वे केवल लंगोट की जगह पत्ते लपेटे रहते। वृक्ष पर रात काटते। कभी नीचे शेर दहाड़ता और ऊपर बंदर किलकारी करते। कभी अजगर और अन्य जानवर घूमते, भटकते पर वे जरा भी विचलित नहीं होते।

इस बीच उन्हें कई वनस्पतियों और जड़ी-बूंटियों का ज्ञान हो गया। रात्रि को कुछ वनस्पतियां दीपक की तरह प्रकाश देतीं। वे उन्हें आवाज देते। कहते- *आ, मेरा यह काम करदे।* उनमें से कुछ हां कहती तो कुछ ना बोलती। हां वाली को वे अपने काम में लेते। इस प्रकार उन्हें वनस्पतियों की सत्ता, महत्ता और उपयोगिता की बड़ी अच्छी जानकारी हो गई। सात वर्ष तक वे फलाहारी रहे। डेढ़ बरस उन्होंने मात्र मक्की की रोटी खाई। यही आहार उनका बाद में भी अन्त तक बना रहा।

एकबार रूंडेड़ा में जब कल्लाजी का मेला भरा तो सरजुदासजी भी गये। वहां कुए की मुंडेर पर बैठे थे कि भीतर से कल्लाजी ने फरमाया- 'बांसवाड़ा से सरजुदास आया है। उसे बुलाओ।' तब वहां उपस्थित सैकड़ों भक्त-जातरियों में सरजुदासजी की ढूंढ शुरू हुई। सरजुदासजी भीतर पहुंचे। वहां एक महिला बैठी हुई थी जिसके कोढ़ चू रहा था। सरजुदासजी ने मन में सोचा, इसे ठीक करें तो मैं इन्हें मानूं। कल्लाजी ने उनसे कहा- 'इसके कलवाणी छिटक।' उन्होंने कलवाणी छिटकी और देखते-देखते उस महिला का कोढ़ चूना बन्द हो गया।

जब सरजुदासजी मेले से लौट रहे थे तब रास्ते में एक महिला को गाड़ी में बिठाकर लाया जा रहा था। सरजुदासजी ने पूछा-'इसे कहां ले जा रहे हो?' उसमें बैठा व्यक्ति बोला- 'इसे सर्प ने काट खाया है सो बावजी (कल्लाजी) के देवरे ले जा रहे हैं।' सरजुदासजी ने उसी वक्त कल्लाजी का आह्‌वान किया। बापूजी को भाव हुआ और उस महिला का जहर चूस उसे चंगा कर दिया। यह उनके जीवन की पहली घटना थी। तब उनकी उम्र मात्र पन्द्रह वर्ष थी।

सरजुदासजी ने बांसवाड़ा जाकर टेकरी पर कल्लाजी की गादी प्रारम्भ करदी। लोगों को पता लगा तो वहां जातरुओं की भीड़ एकत्रित होने लग गई। यहां की गादी बड़ी प्रभावी रही। सैंकड़ों लोगों का असाध्य इलाज हुआ। धाम बढ़ती गई किन्तु अचानक मालिक ने वहां से रतलाम के पास बड़ी सरवण गादी लगाने का आदेश दिया। बड़ी सरवण के लम्बे फैले मैदान में हजारों लोगों की भीड़ हर समय बनी रहती। इसका प्रभाव यह रहा कि मालिक ने घोड़े पर सवार हो प्रत्येक का व्यक्तिश: नहीं कर समूह रूप में सब पर शक्ति (तलवार) का स्पर्श कर इलाज करना प्रारंभ कर दिया।

मालिक की कृपा से जब सारे रोगी ठीक होने लगे तो वहां आने वालों की संख्या में और अधिक दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होने लगगई। ऐसी स्थिति में स्थानीय व्यक्तियों में ईर्ष्या द्वेष और बेइमानी ने घर कर लिया। जब इन अवगुणों की अति होती देखी गई तो मालिक ने वह स्थान भी छुड़वा दिया।

वहां से सरजुदासजी गाड़ी में बैठकर चल पड़े। तब तक उन्हें यह मालूम नहीं पड़ा कि कहां जाना है। इसी बीच अहमदाबाद का एक सेठ मिल गया जो प्राय: बड़ी सरवण में मालिक की गादी पर आता रहता था। वह सरजुदासजी को अहमदाबाद ले गया फलस्वरूप फूलपुर गांव में साबरमती के किनारे नई गादी प्रारंभ करदी गई।

बड़ी सरवण आने वाले सभी लोग फूलपुर आने लग गये। वहां भी कल्लाजी के परचों ने बड़े-बड़े चमत्कारी काम किये परन्तु जब किसी के द्वारा वहां का मूल स्थान विकृत कर दिया गया तब साबरमती ने जोर की ऐसी बाढ़ दी कि देवस्थान का वह पूरा हिस्सा ही उसमें बह चला गया। केवल दीपक जलने वाला स्थान बचा रहा। यह घटना सन् 1973 की है। मुझे बापूजी ने नदी के ढावे वाला वह स्थान भी दिखाया।

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना पोथीखाना पोथीखाना

साहस और पुरुषार्थ जगाती प्राकृत कथाएं

कृपया ऐसी पुस्तकें समीक्षार्थ न भेजें जिनके किसी भी अंश

डॉ. प्रेमसुमन जैन प्राकृत के साहसी, पुरुषार्थी और पारंगत प्रज्ञा-मनीषी हैं। देश-विदेश में उनके प्राकृत विषयक शोधानुसंधान, व्याख्यान तथा वैचारिकता से अनेक महानुभाव प्रेरित एवं प्रोत्साहित होकर अध्ययनशील बने हैं साथ ही उनके स्तुत्य कार्यों से प्रभावित हो कई संस्थानों ने उन्हें पुरस्कृत, सम्मानित कर अपने को गौरवान्वित किया है। उनकी उपलब्धियों से कई बार यह भी लगा कि प्राकृत और प्रेमसुमन एक-दूसरे के पर्याय हो गये हैं।

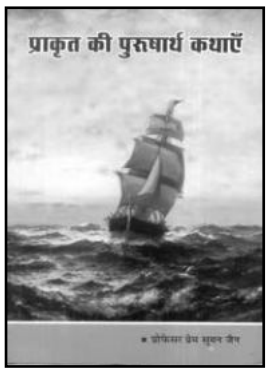

प्रस्तुत पुरुषार्थ कथाएं प्राकृत के कुवलयमालाकहा नामक ग्रंथ से ली गई हैं। अपने मंगल आशीष में श्रमणबेलगोला जैन मठ के जगद्गुरु स्वस्तिश्री कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी ने लिखा कि कुवलयमालाकहा आचार्य उद्योतनसूरी कृत प्राकृत का प्रथम साहित्यिक और सांस्कृतिक ग्रंथ है। इसकी सांस्कृतिक और नैतिक अर्थवत्ता को प्रो. प्रेमसुमन जैन ने 1975 में अपने शोधप्रबन्ध द्वारा उजागर किया। उन्होंने सरल और सुबोध शैली में कतिपय उन कथाओं को प्रस्तुत किया है जो मन को शुद्ध करने की प्रेरणा देकर साधना में लगने को उत्साहित करती हैं।

पुस्तक के प्रकाशकद्वय संस्थापक संस्थान राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रमणबेलगोला के निदेशक डॉ. रमेशचन्द्र जैन तथा प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक देवेन्द्रराज मेहता ने प्रकाशकीय वक्तव्य में लिखा कि कुवलयमालाकहा आठवीं शताब्दी में लिखित प्राकृत कथाओं का प्रतिनिधि ग्रंथ है जो क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह के वशीभूत उन पांच पात्रों के जीवन की विविध घटनाओं को प्रस्तुत करती हैं जो उनके साहस और पुरुषार्थ से भरी हुई हैं। ऐसी कथाएं भी हैं जो कर्मफल, साधना और संयम के महत्व को प्रतिपादित करती हैं। पारिवारिक सौहार्द्र, मित्रता, वात्सल्य और नारी-स्वातंत्र्य की शिक्षा भी देती हैं।

पुस्तक के 'प्राथमिक' शीर्षक अपने लेखकीय कथ्य में डॉ. प्रेमसुमन जैन ने स्पष्ट किया कि ग्रंथ में साहस, धैर्य, सदाचरण और पुरुषार्थ की अनुपम कथाएं हैं जिनके पात्र किसी भी कठिनाई या दुख की गहराई से हारते नहीं हैं अपितु साहस के साथ संयम धारण कर जीवन को संवारने में लग जाते हैं और धर्म अर्थ काम तथा पुरुषार्थ के साथ मोक्ष की प्राप्ति तक की यात्रा करते हैं।

कहना न होगा कि पुस्तक में चयनित कथाएं 8वीं शताब्दी के समय के समाज, संस्कृति तथा जीवनचर्या जनित आचरण की जो जानकारी प्रस्तुत करती हैं उससे आज के सामाजिक जीवनयापन के तौरतरीकों को समझने, सराहने का प्रामाणिक तथ्य हाथ लगता है।

कुल 160 पृष्ठीय, 120 रूपये मूल्य की यह पुस्तक 26 कथाएं लिए हैं। प्रारंभ में ुवलयमालाकहा नामक ग्रंथ के वैशिष्ट्य और उसका सार-संक्षेप प्रस्तुत किया गया है और परिशिष्ट में ग्रंथ के अनुच्छेद एक से बारह तक का अनुवाद दिया है ताकि पाठक उस प्राकृत ग्रंथ से परिचित हो सकें।

हाइकु के लिए जापानी ढंग नहीं, राजस्थानी रंग जरूरी

अथवा उद्धरण के उपयोग के लिए लेखक अथवा प्रकाशक से लिखित स्वीकृति लेनी जरूरी हो।

रचना कवि की हो अथवा कुम्हार की, साहित्य की हो याकि सिकलीगर की ; उसका उद्देश्य उपयोगिता देखने, अर्थवत्ता प्राप्त करने, आनंद फैलाने और अच्छाई समझने का रहता है। कविता यानी काव्य विधा साहित्य की उत्कृष्ट विधा कही गई है जिसकी रचना अन्य विधाओं से भिन्न पद्य प्रमुख है जबकि दूसरी सारी विधाओं का केनवास गद्य सम्मत है। कविता छंद ताल तुक लय युक्त हो तो ही अच्छी लगती है। अलंकार युक्त कविता बनीठनी लगती है।

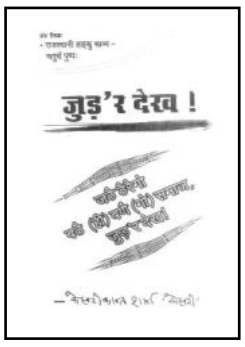

हाइकु तीन पंक्तियों में लिखा जापानी छंद है जिसकी पंक्तियां क्रमश: पांच, सात तथा पांच वर्ण का बनाव लिए होती हैं। इस आधार पर प्रस्तुत काव्य संग्रह जुड़' र देख लेखक केसरीकान्त 'केसरी' का चौथा काव्य संग्रह है। इतने हाइकु लिखने वाले संभवत: केसरीजी पहले व्यक्ति हैं। इसीलिए भाई लोगों ने तो उन्हें उपन्यास सम्राट की तरह हाइकु सम्राट तक कह दिया है।

हाइकु वर्ण प्रधान है, मात्रा प्रधान नहीं। यदि इसे काव्य की श्रेणी है तो छंद के साथ मात्रा, लय, ताल और तुक का मिलाप यदि नहीं है तो उसे काव्य की कसौटी देना कहां तक उचित होगा। क्या तब वह गद्य नहीं रह जाएगा, यह विचारणीय है। केसरीजी के इस संग्रह में 480 हाइकु हैं। उनमें से लगभग आधे कोष्टक में दिये गये वर्ण के बिना पूर्ण नहीं होते। कहीं-कहीं तो तीन पंक्तियों की तरह ही चौथी पंक्ति और दी गई है जो कोष्टक लिए है। इससे इन हाइकुओं का गद्य पक्ष ही प्रबल बना रहता है। तीनों चारों पंक्तियां न तो पूर्ण गद्य का ही मजा देती हैं और पद्य तो इसलिए नहीं कहा जा सकता कि उसमें लय तुक की कोई सौम्यता ही नहीं है। यथा -

(1)

वादा सूं जीत्या
(अब) नेता बोलै -'' ना ना ना
बै (तो फगत) जुमला था।'' (479)

(2)

बा (नायां री छोरी) धोक खायी
''आज दस्तूर हुयो!
(आसीरवाद द्यो)''
- (जाणै) फूल खिलगा
(''सौभाग्यवती भव!'') (352)

(3)

'निरोलो' हूं मैं
सूर्यकान्त (त्रिपाठी) तो नहीं
केसरीकान्त (शर्मा ; 'केसरी')
(480)

यह भी कि हाइकु कोई गंभीर कथन वाला नहीं लगता। रोजमर्रा के जीवन में जो आपसी सामान्य सी बातचीत होती है, उसी का कथन उसमें ढला लगता है। यथा -

(1)

केसरी हथ्थ
मंडावै री कलम
ठीक सूं मांड (207)

(2)

मांडै है 'पोथा'
बांचै कुंण है मोथा!
आखर थोथा ! (157)

(3)

साहित्यकार
नीं, लेखक बणगो
ठूंठ (सो) तणगो ! (88)

(4)

''मोडल बणूं
(या) दीपिका पादुकोण?''
पोतीजी बोल्या!
(दसदै माथे में खायी,
चोखी जायी!) (15)

तब यह सोचना होगा कि इस विधा को साहित्य में कहां और कैसे बिराजित करें। 'मेरी बात' में रचनाकार केसरीजी लिख रहे हैं- ''मेरे लिए हाइकु स्वत:स्फूर्त उद्गार हैं क्योंकि मैं बुलाता नहीं, फिर भी आ ही जाते हैं हाइकु- ''बुलाऊं कोनी / पछै भी आ ही ज्यावै / हाइकुड़िया।'' लगता है मुझे हाइकु फोबिया हो गया है।

जब तरंग आती है तो चलती ही रहती है जेहन में.... और अब तो कई हाइकुकार पैदा हो गए हैं राजस्थानी में जिनकी कई कृतियां अलोकित-प्रकाशित हो चुकी हैं। मैं तो चाहता हूं कि हाइकु राजस्थानी में दूधां न्हावो, पूतां फलो।''

हाइकु के संबंध में उनका यह कथन ही बहुत सारी बात स्वत: कह देता है। अब तो दूधां न्हावो वाली कहावत भी कई दृष्टियों से बेमानी हो गई है, ऐसा सभी लोग कहने लगे हैं। जो भी हो, जुड़' र देख कथन में तो किसी को कोई एतराज क्यों होगा। सभी जुड़ेंगे और हाइकु को जापानी ढंग नहीं, राजस्थानी रंग देकर सार्थक करेंगे। **-म. भा.**

मंगलमय समाज को रचतीं चेतनापरक कथाएं

'काळजै कोर बराबर दोन्यूं' नामक राजस्थानी कृति में भैरूसिंह राव 'क्रांति' ने शिक्षा, समाज और संस्कृति की महती बातों को लघु कथाओं के रूप में लालित्यमय बनाने का प्रयास किया है। इनमें राजस्थान के इतिहास, समाज और संस्कृति की मनोरम छवि के दर्शन होते हैं।

बातन हाथी पाइये, बातन हाथी पग्ग, कोठी रोवै नै झोंपड़ी सोवै, मनुष्य के भीतर का राम क्यों निकल गया, रुपै हो गया केस, करम में लिख्या कंकर, पानी का मुहावरा जगत और ऐसी ही दूसरी बातें अपने कथन में कहावतों और मुहावरों के माध्यम से बड़ी सरसता के साथ सहजानंद देती हैं।

लेखक ने 'हिवड़ा रा भाव' शीर्षक में अपनी मनोभावना को व्यक्त करते लिखा है- 'मैंने इस कृति में सेस्कृति के संरक्षण, संस्कार और मानवीय मूल्यों के सृजन, रूढ़िवादी मान्यताओं के अन्त, आर्थिक विषमता, भ्रूण हत्या, कैंसर जैसे पिशाचों से मुक्ति, जल संरक्षण, देशप्रेम और प्रजा वत्सल जैसे भावों की बहुव्याप्ति के कथा-लेखों को चित्रोपम के भांत उकेरा है।'

डॉ. ज्योतिपुंज ने इन्हें लोकचेतना रा लघु आलेख और लघु कथाएं कहकर उनकी महत्ता और संप्रेषण क्षमता को आंकते लिखा- 'राजस्थानी के ये लघु आलेख किसी विधा विशेष की अपेक्षा नहीं रखते। इनकी रोचकता इनके गुणों की तब प्रशंसा करती है जब पाठक इन्हें पढ़ने लगता है तो बीच में छोड़ने की इच्छा नहीं करता। इन आलेखों की यह विशेषता है कि इनमें राजस्थानी की पहचान बोल रही है।'

कृति की लघु कथाएं मार्मिक एवं श्रेष्ठ बन पड़ी हैं जो पाठकों के मानस को कहीं बिरदावती तो कहीं चूभन भरा कटाक्ष करती हैं। इनमें मेवाड़ी बोली का मिठास पाठकों को आकर्षित करता है। समंद पूजन की संस्कृति में सरोवर में वरुणदेव की पूजा-अर्चना करती महिलाओं द्वारा गीतों में व्यक्त मंगल कामनाएं- 'पांचवी डूबकी संसार खातर, सगळां ने सुखी करो ए', वसुधैव कुटुम्बकम की उदात्त अभिव्यक्ति हैं।

'काळजै कोर बराबर दोन्यूं' को पढ़ते मुझे हाड़ौती कवि सुरेन्द्रसिंह सौलंकी याद आ गये जिनकी गीत-पंक्तियां वर्षों पूर्व सुने एक विराट कवि सम्मेलन को वाहवाही का शिखर बना गई थीं- 'बेटो म्हारै काळजै री कोर / बेटी जी म्हारै जीव री जड़ी / जी म्हारै जीव री जड़ी।'

बोधि प्रकाशन जयपुर से छपी 150 रूपये मूल्य की यह कृति समाज को जगाने वाली सिद्ध होगी। भैरूसिंह राव 'क्रांति' ऐसी कृतियों के माध्यम से हेत, प्रेम और मिनखाचार जैसी भावनाओं का विस्तार कर मंगलमय समाज की रचना करते रहेंगे।

-डॉ. आईदानसिंह भाटी

-अभिनव प्रकाशन-

डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित जैन लोक का पारदर्शी मन रिचर्स फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, चैन्नई से प्रकाशित

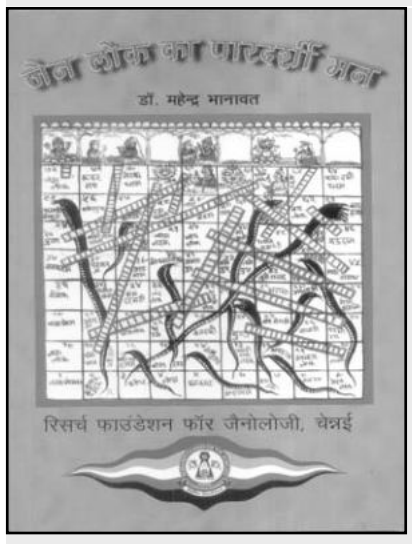

जैनधर्म के लोकजीवन, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं और लोकमान्यताओं के जाने-अनजाने पहलुओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने में यह पुस्तक प्रेरणा बनेगी।

-डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया

यह पुस्तक लोकजीवन में धर्म चेतना तथा धार्मिक जीवन में लोक चेतना जगाने का संदेश देती है। धार्मिक जीवन में रची-बसी अनेक परम्पराओं पर पहलीबार सर्वथा नवीन ढंग से लेखक ने इसमें कंठासीन साहित्य को महत्व देते हुए इसके संरक्षण की प्रेरणा दी है।

- डॉ. दिलीप धींग

मेरा उद्देश्य धर्मस्थानों में खासकर राजस्थान मेवाड़ में जो अलिखित साहित्य प्रचलन में है उसे संरक्षित और जगजाहिर करने का रहा है। इस पुस्तक में उन विधाओं की चासनी है। शुद्ध लोक परंपरा की दृष्टि से ही मेरा लेखन रहा है और अधिकतर महिलाओं में जो धार्मिक आस्था देखी और अनाम रूप में उनका जो रचनात्मक रूप रहा उसका उल्लेख करना इस लेखन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 अगस्त 2017

सम्पादकीय

मांगलिक पशुओं की पूजा-प्रतिष्ठा

मनुष्य का साथी मनुष्य ही नहीं है। वह समस्त चराचर जगत ही उसका अपना है जिसके बिना उसका जीवन अधूरा ही है। वह उन शक्तियों का तो उपासक है ही कि जो दृश्यमान है मगर अदृश्य शक्तियों की उपासना के बिना भी उसका कार्य सिद्ध नहीं होता। अलग-अलग आवश्यकताओं, जुदा-जुदा परिस्थितियों, विविध संस्कारों, काज-सिद्धि के अवसरों, रोग निवारक मनौतियों तथा स्वस्थ एवं समृद्ध बने रहने की चाह में मनुष्य क्या-क्या नहीं करता है। किसी का अहित करने की लालसा भी उसे मारक विद्याओं की प्राप्ति की साधना कराती है।

कई देव-देवियां हैं जिनके अपने-अपने वाहन हैं। भक्त लोग उनकी निश्चित तिथि पर उनके वाहन पूजते हैं। घर-घर उनके नाम के वाहन घुमाते हैं। गोगा नवमी पर गांव-गांव गोगादेव का कच्ची मिट्टी का घोड़ा घुमाया जाता है। अलवर की ओर ऊंगा नामक पौधा भी पूजा जाता है। घर की दीवालों पर हरिये गोबर के घोड़ों का अंकन किया जाता है।

भीलों के गवरी नाच में अंतिम दिन वळावण पर जुलूस के दौरान कच्ची मिट्टी का विशालकाय हाथी निकाला जाता है जिसे अन्त में पानी में विसर्जित किया जाता है। गंगानगर की ओर गोसाईजी का गमला निकाला जाता है। यह पक्का माटी का होता है। गरासिया आदिवासी घोड़ादेव की पूजा करते हैं। मनौतीस्वरूप वे देवरे पर पके हुए घोड़े चढ़ाते हैं। ऐसे एक चबूतरे पर मैंने छोटे-बड़े अनेक घोड़े चढ़े देखे। शीतला माता के थापे अंकन में दीवाल पर शीतला को गाड़ी किंवा रथ में बिठा दिखाया जाता है। उस रथ का सेवनहार गधा होता है। शीतला को गधे की सवारी प्रिय है।

देवियों में हस्तिमाता हाथी पर, हंसमाता हंस पर, गवरजा हाथी पर, रेबारियों की देवी ऊंट पर, मोरमाता मोर की सवारी किये दिखाई जाती है। घोड़े-घोड़ी तो प्रायः सभी देव-देवियों की सवारी होते ही हैं। रामदेवजी को कपड़े का बना घोड़ा चढ़ाया जाता है। ऐसे पांच-पांच फीट से लेकर अंगुल तक के छोटे-बड़े घोड़े लोग रामदेवरा उनके तीर्थस्थल पर चढ़ाते हैं। जालोर के एक मंदिर में वर्षों पूर्व मिट्टी के बने विशालकाय हाथी देखे गये।

बरसात नहीं होने पर बालिकाएं गोबर की बनी डेड़क माता घर-घर घुमाती हैं। कुपित होकर घर की दीवालों पर गोबर-मिट्टी से उल्टे इन्द्र-इन्द्राणी का चित्र कोरते हैं। वनस्पतियों तथा पेड़-पौधों में भी देवता का, देवी का निवास माना जाता है। बड़ली में बड़ली माता, पीपल में पीपलाज तथा नीम में नीमज माता का निवास मानकर इनकी पूजा की जाती है।

अच्छे समझेबुझे लोग वनस्पतियों में ईश्वरत्व का अस्तित्व मानते हैं। ऐसे साधक भी हुए जिन्होंने जंगल-साधना कर वनस्पतियों से संवाद बनाया। कई साधक ऐसी वनस्पतियों से परिचित होते हैं जिनके सहारे वे वर्षों की तपस्या कर गुजरते हैं। अच्छे सिद्ध हवाभाखी हो जाते हैं। सोचने पर पूरी सृष्टि और उसका लोक बड़ा अजूबा, चमत्कारों से भरा तथा पल-पल विस्मय देने वाला होता है।

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ कार्यक्रम के तहत पीआईएमएस हॉस्पिटल में इलाज प्रारम्भ

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत इलाज प्रारम्भ हो गया है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि आर.बी.एस.के. के अंतर्गत 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की विभिन्न प्रकार की गंभीर व जन्मजात बीमारियों का इलाज़ प्रारम्भ कर दिया गया है। इस योजना में आंख, कान, कटे तालु, जन्मजात स्पाइनल आदि बीमारियों के ऑपरेशन किए जाएंगे साथ ही योजना मे हड्डी के विशेष तथा हृदय के ऑपरेशन भी संभव होंगे।

उदयपुर में फतहसागर की पाल पर विगत 150 वर्ष पूर्व महाराणा फतहसिंह द्वारा प्रारंभ किये गये हरियाली अमावस्या पर आयोजित दो दिवसीय मेले का दृश्य। दूसरे दिन का मेला केवल महिलाओं के लिए भरता है। महाराणी चावड़ीजी के आग्रह पर महाराणा ने उनके लिए सहेलियों की बाड़ी में यह सखी मेला प्रारंभ किया जो आज भी मेवाड़ी सखी-सहेलियों का सर्वाधिक मनोरंजक बना हुआ है। **फोटो - राजेन्द्र हिलोरिया**

गोपेन्द्रनाथ भट्ट सम्मानित

उदयपुर। केंद्रीय विधि एवं न्याय तथा इलेक्ट्रोनिक और सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री पी. पी. चौधरी ने राजस्थान सूचना केंद्र के अतिरिक्त निदेशक

गोपेन्द्रनाथ भट्ट को प्रवासी राजस्थानियों और सरकार के मध्य बेहतर समन्वयक की भूमिका निभाने और जनसम्पर्क के क्षेत्र में दी गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया। भट्ट को यह सम्मान दिल्ली में राजस्थान रत्नाकर के वार्षिक समारोह में प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल थे

केंद्रीय राज्यमंत्री पी. पी. चौधरी, मशहूर हास्य व व्यंग्य कवि सुरेंद्र शर्मा, जयराम आश्रम हरिद्वार के स्वामी ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी व रत्नाकर के चेयरमेन राजेन्द्र गुप्ता, प्रधान रतन पोद्दार व महामंत्री संतीश गुप्ता ने भट्ट को स्मृति चिंह भेंट कर सम्मानित किया।

अदालत में चुनौती देगा सहारा समूह

उदयपुर। सहारा समूह ने अपने वक्तव्य में कहा है कि सहारा लाइफ वर्ष 2004 से व्यवसायरत है व पिछले 7 वर्षो से यह निरन्तर लाभ में चल रही कम्पनी है। यह आईआरडीए के सभी नियमों व शर्तों की कसौटी पर भी लगातार व पूरी तरह खरी उतरती रही है। सहारा लाइफ की परिसम्पत्तियाँ इसकी देनदारी से अधिक हैं तथा इसके विरुद्ध किसी भी बीमाधारक ने नअदायगी की कोई भी शिकायत दर्ज नहीं की हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आईआरडीए ने सहारा लाइफ व्यवसाय एक अन्य बीमा कम्पनी आईसीआईसीआई प्रूडेन्शियल को कुछ आधार पर हस्तांतरित कर दिया है। जिनमें प्रमुख्त: आरोप यह है कि चूंकि प्रमोटर कम्पनी के प्रमोटर शेयर होल्डर सुब्रतराय सहारा न्यायिक हिरासत में रहे हैं अत: प्रमोटर कम्पनी अब फिट व प्रॉपर नहीं हैं। सेबी द्वारा सहारा म्युचुअल फंड के विरुद्ध एक्शन के लिए भी यही कारण दिया गया हैं। दूसरा आरोप यह है कि रू 78 करोड़ की राशि कम्पनी से निकाली गई है जोकि गलत है। यह राशि एक कम्पनी सहारा इंडिया के पास सिक्योरिटी डिपॉजिट के रुप में रखी गई है, जिसने 150 स्थानो पर सुसज्जित व कम्प्युटराइज्ड ऑफिस उपलब्ध कराये है। चूंकि सहारा इडिया कोई किराया या बिजली खर्च नहीं ले रही है, अत: यह सिक्योरिटी डिपॉजिट तर्कसंगत है। यह व्यवस्था सहारा लाइफ हेतु काफी लाभप्रद रही है। दुर्भाग्यवश आईआरडीए ने यह निर्णय बिना सोचे समझे लिया है। यह सिक्योरिटी राशि पूरी तरह से सहारा लाइफ को देय है। एक ओर आईआरडीए ने हमें शाखा संख्या बढाने की अनुमति नही दी और अब आरोप लगा रहा है कि व्यवसाय बढ़ नही रहा है। आईआरडीए ने केवल उन्हें ज्ञात कारणों के चलते एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त किया है व उक्त एडमिनिस्ट्रेटर ने गुप्त ढंग से आईआरडीए में एक रिपोर्ट दाखिल की है कि सहारा लाइफ का व्यवसाय किसी अन्य कम्पनी को दे दिया जाए। न तो इस एडमिनिस्ट्रेटर रिपोर्ट की कोई प्रति सहारा लाइफ को उपलब्ध करवाई गई है और न ही इस तीसरी संस्था को व्यवसाय हस्तांतरण का आदेश देने से पूर्व ऐसी रिपोर्ट पर कोई सुनवाई का अवसर दिया गया है। सहारा लाइफ ने कभी भी आपने पॉलिसी धारकों के हितों के प्रतिकूल किसी भी तरह का कदम नहीं उठाया है। सहारा आईआरडीए के ऐसे रवैये के विरुद्ध न्यायालय का द्वार खटखटाएगी।

पन्द्रह हाइकु

(1) हाइकु
हाय कूटो
लिखणो ज्यूं।

(2) घट्टी
पीसै ज्यूं धारै
ऊंट ज्यूं गरडाटा मारै।

(3) फरकणी फरै
पतंगो मरै
मइड़ो झरै।

(4) फरतो चरै
बंध्यौ भूखा मरै
राम कई करै।

(5) डील नरम वेइग्यौ
ताव तेज पड़ग्यौ
हाल परम पोंचग्यौ।

(6) कीड़ी नै कण
हाथी नै मण
टोपलो-टोपलो जण।

(7) भमरो टूंधै
टेगड़ो सूंघै
दीवार्‌यौ ऊंघै।

(8) रमत्या रमै
बरखा जमै
भारी भार खमै।

(9) गाय रै आगाऊं नीं
गधेड़ा रै पाछाऊं नीं
हींगड़ो नै लात खावाऊं नीं।

(10) पराई पंचात सूं छेटी
वना काम नीं खाणी भेटी
सासरेई ठीक सोवे बेटी।

(11) वींद जाणै नी गोखड़ो
वै रोकड़ो
तो परणै डोकरो।

(12) कई मेलूं
कई खावूं
किस विध समझावूं।

(13) थैं परणीजग्या
म्हैं परण्या नीं
पण बरात में तो ग्या।

(14) टेडो-टेडो कई नाळै
यूं कई चालै
डोफीरो डील गालै।

(15) थें लूंठा घणा
थोथा चणा
बाजै घणा।

प्रो. प्रेमसुमन जैन 'प्राकृत ज्ञानभारती' एवं 'प्राकृत वांग्मय' से सम्मानित

उदयपुर। प्रो. प्रेमसुमन जैन ने प्राकृत साहित्य के प्रचार-प्रसार के साथ इस देश की संस्कृति और जीवन मूल्यों को पूरे विश्व में प्रसारित किया है। उन्होंने शिक्षा जगत से जितना लिया उससे कहीं ज्यादा मां सरस्वती के चरणों में पुन: अर्पित कर दिया।

ये विचार राजस्थान सरकार के गृहमंत्री गुलाबंचद कटारिया ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किये। कटारिया ने प्रो. जैन को बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला द्वारा स्वर्णपदक के साथ के प्राकृत ज्ञानभारती इन्टरनेशनल अवार्ड प्रदान किया।

सम्मान समारोह के अध्यक्ष मोहनलाल सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा, बैंगलोर के कन्नड़ साहित्य मनीषी प्रो. हम्पा नागराजय्या, बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के कार्याध्यक्ष जस्टिस एम. जे. इन्द्रकुमार एवं भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी उदयपुर के उपाध्यक्ष डॉ. देव कोठारी ने प्रो. जैन को शॉल, माला, स्वर्णपदक एवं प्रशस्तिपत्र के साथ तीन लाख रुपयों की अवार्ड राशि प्रदान की।

30 जुलाई को आयोजित इस समारोह के क्रम में प्रो. जे. पी. शर्मा ने विद्याभूषण लोकमंगल न्यास, नई दिल्ली की ओर से प्रो. जैन को एक लाख रूपये का आचार्य विद्यानन्द मुनिराज प्राकृत वांग्मय पुरस्कार एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया। न्यास के अध्यक्ष प्रो. जयकुमार उपाध्ये ने प्राकृत वांग्मय के क्षेत्र में प्रो.प्रेमसुमन जैन के योगदान को अत्यंत मूल्यवान और आज के संदर्भ में बहुमूल्य बताया।

इस अवसर पर स्कालर्स सोसायटी के महामन्त्री प्रो. जिनेन्द्र जैन द्वारा सम्पादित अक्खर पाहुड़ अभिनन्दन पुस्तिका का महापौर चन्द्रसिंह कोठारी द्वारा लोकार्पण किया गया। डॉ. ज्योतिबाबू जैन ने बताया कि समारोह में डॉ. सुभाष कोठारी की अगवानी में समाज की विभिन्न संसथाओं एवं गणमान्य नागरिकों ने प्रो. जैन का भावभीना अभिनन्दन किया।

देश का पहला प्रिंट न्यूजपेपर एग्रीगेटर- पेपरब्वॉय लॉन्च

उदयपुर। बेंगलुरू में रहने वाले जोन्ना वेंकट कार्तिक राजा ने पेपरब्वॉय की स्थापना की है। 18 वर्षीय जोन्ना बहुत खुश है, क्योंकि उसकी 15 महीनों की कड़ी मेहनत आखिरकार अब रंग लेकर आई है। पेपरब्वॉय एक मोबाइल एप्प है जिसमें भारतीय समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं की सबसे व्यापक श्रृंखला मौजूद है और इन्हें इसके प्लेटफॉर्म पर वास्तविक समय में अपलोड किया गया है। पेपरब्वॉय एक भाषाई प्लेटफॉर्म है। इसमें प्रादेशिक प्रकाशन शामिल होंगे जोकि भारतीय समाचारों को पढ़ने की आदतों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पेपरब्वॉय का उद्देश्य समाचारपत्रों के वैश्विक पाठकों को आकर्षित करना है। पेपरब्वॉय का उद्देश्य सफर के दौरान हरेक के स्थानीय समाचार ब्राउज करने, खरीदने और पढ़ने के लिए अंतिम प्लेटफॉर्म बनना है।

राजस्थान पेपरब्वॉय के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है। कंपनी ने पहले ही इस क्षेत्र के 83 प्रतिशत से अधिक समाचारपत्रों को सूचीबद्ध कर लिया है। इसे आने वाले महीनों में 100 प्रतिशत लिस्टिंग प्राप्त करने की उम्मीद है। पेपरब्वॉय ने फिलहाल देश भर के 400 से अधिक समाचारपत्रों और पत्रिकाओं को सूचीबद्ध किया है और यह गूगल प्लेस्टोर पर लाइव है।

पेपरब्वॉय के संस्थापक जोन्ना वेंकट कार्तिक राजा ने बताया कि मैंने पेपरब्वॉय की परिकल्पना इसलिए की क्योंकि मुझे समाचारपत्र पढ़ने और डिजिटल उपकरणों के बीच एक विशिष्ट परस्पर संबंध दिखाई दिया। जब मैंने पाया कि मैं यात्रा के दौरान अपने दैनिक समाचारपत्र को नहीं पढ़ पाता था, तब इसने मुझे इसका समाधान ढूंढने के लिए प्रेरित किया।

शोध और मेरे दोस्तों के साथ चर्चाओं ने मुझे एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विकसित करने की प्रेरणा प्रदान की , जोकि आपकी पसंद की स्क्रीन पर हर दिन समाचार प्रस्तुत कर सके। उम्मीद है कि भविष्य में मैं इस सॉल्यूशन को विदेशों में दूसरे बाजारों में भी ले जाऊंगा। किसी भी भाषा को आसानी से समायोजित करने के लिए इस प्लेटफॉर्म का दायरा बढ़ाया जा सकता है।

एक स्पष्ट एवं साधारण इंटरफेस के साथ, इस एप्प में पॉप अप एड्स अथवा इंटरफेरेंसेस नहीं हैं। यह व्यक्ति को उनके समाचार ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों मोड में पढ़ने की अनुमति देता है, इस तरह लोगों के लिए अपनी सुविधा के अनुसार पसंदीदा समाचारपत्र पढ़ना बहुत आसान हो गया है।

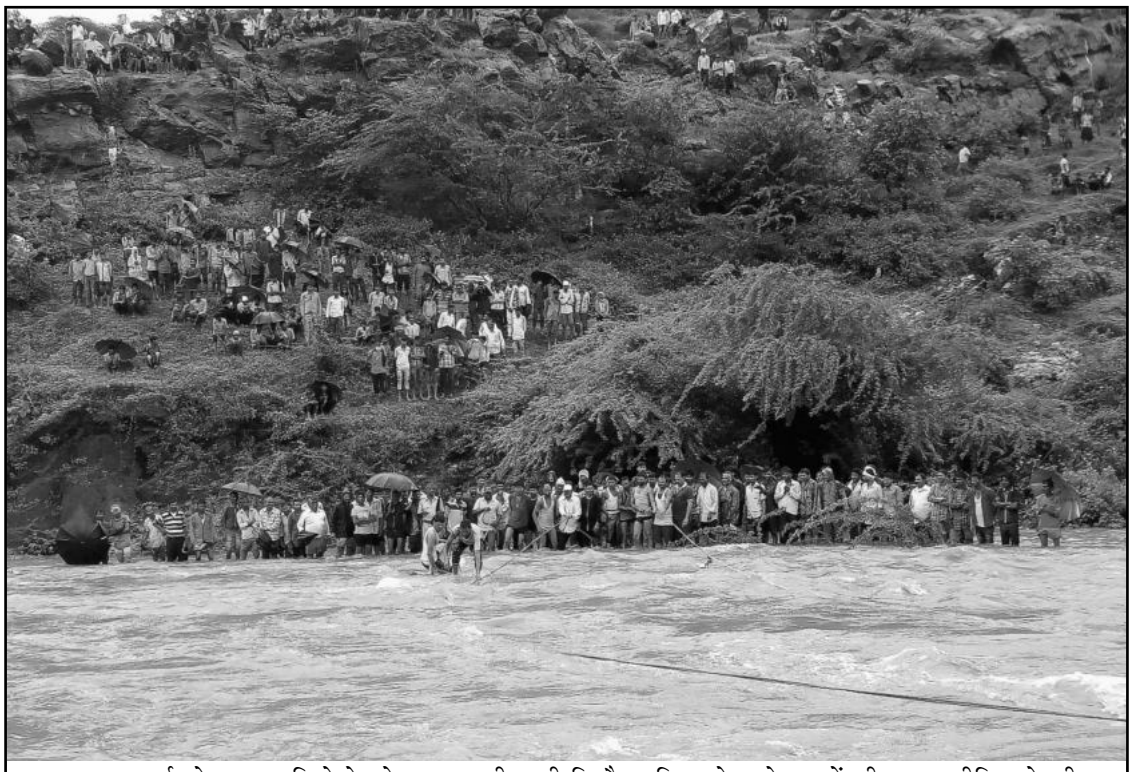

24 जुलाई को उदयपुर जिले के खेरवाड़ा तहसील की चित्तौड़ पुलिया से आगे पहाड़ों की सघन हरीतिमा के बीच उफनती नदी के बहाव का बहलाव लेते ग्रामीणजन। **फोटो - धर्मेन्द्र रावल**

डॉ. देव कोठारी द्वारा अनुवादित 'चारू वसंता' का लोकार्पण

उदयपुर। कन्नड़ भाषा में लिखित नाडोज प्रो. हम्पा नागराजय्या द्वारा लिखित 'चारू वसंता' नामक महाकाव्य का अब तक नौ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इस प्रेमकाव्य का ख्यातनाम साहित्यकार डॉ. देव कोठारी द्वारा राजस्थानी भाषा में अनुवाद इस काव्य

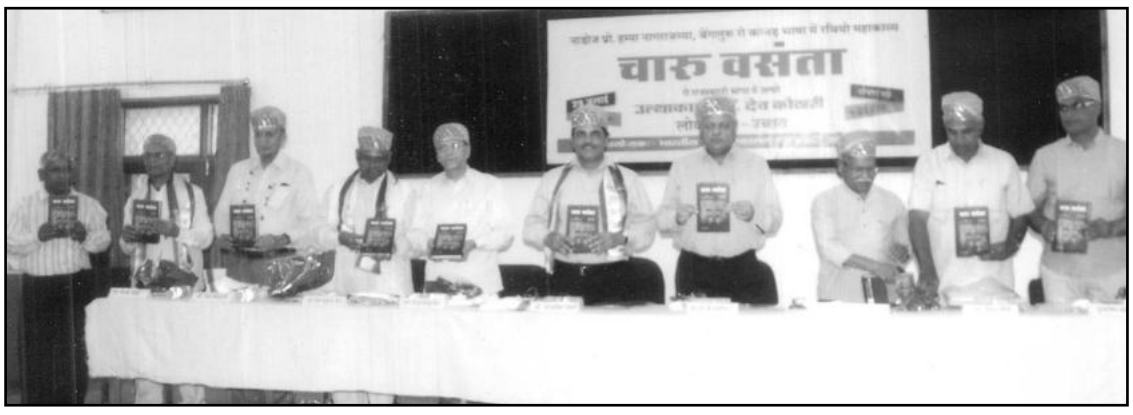

की लोकप्रियता का दर्शन है। डॉ. कोठारी ने राजस्थानी को कन्नड़ भाषा से जोड़ कर न केवल राजस्थानी साहित्य की समृद्धि की है अपितु कन्नड़ और राजस्थानी के भाषा-सेतु को भी विद्वानों के लिए सुलभ कर दिया है। ये विचार कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति डॉ. पी. के दशोरा ने अनुवादित कृति को लोकार्पित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

समारोह के अध्यक्ष महाराणा प्रताप कृषि विवि के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ. कोठारी राजस्थानी भाषा, साहित्य और इतिहास के मर्मज्ञ और गंभीर विद्वान हैं। अनुवाद के क्षेत्र में उनकी अच्छी पहुंच है। इस कृति से उन्होंने कन्नड़ और राजस्थानी के भाषा-शिल्प-सौंदर्य को बड़ी ही सघनता से वर्णित किया है। विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध शैली वैज्ञानिक प्रो. के. के. शर्मा ने अपने शिष्य के रूप में डॉ. देव कोठारी की साहित्यसेवा पर गर्व करते हुए बताया कि 'चारू वसंता' का राजस्थानी अनुवाद श्रेष्ठ काव्य की महत्ता को प्रतिपादित करने के साथ डॉ. कोठारी ने काव्य-कथा की भाव व्यंजना की मौलिकता को राजस्थानी रंग से निखारा है।

प्राकृत भाषा-साहित्य के सम्मान्य मनीषी प्रो. प्रेमसुमन जैन ने बताया कि 'चारू वसंता' की कथा-वस्तु के सूत्र गुणाढ्य द्वारा पैशाची भाषा में लिखित बृहत्कथा तथा अन्य कई प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों में मिलते हैं। उन सूत्रों के साथ लोकभाषा में उपलब्ध सूत्रों को संकलित कर प्रो. हम्पा नागराजय्या ने इस काव्य का प्रणयन किया है।

बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ श्रवणबेलगोला के कार्याध्यक्ष एवं कर्नाटक के भू. पू. न्यायाधीश एम. जे. इन्द्रकुमार ने कन्नड़ के इस लोकप्रिय महाकाव्य का राजस्थानी में अनुवाद करने पर डॉ. देव कोठारी को बधाई दी।

राजस्थानी भाषा में अनूदित इस महाकाव्य की समीक्षा करते हुए राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मदन सैनी तथा दुलाराम सहारण ने 'चारू वसंता' महाकाव्य की समीक्षा करते हुए डॉ. कोठारी के योगदान को अत्यंत मूल्यवान बताया।

'चारू वसंता' के मूल लेखक कन्नड़ साहित्य के वरिष्ठ विद्वान नाडोज प्रो. हम्पा नागराजय्या ने कहा कि डॉ. देव कोठारी मेरे अनुरोध को स्वीकार करते हुए यथा समय इसका अनुवाद कर मेरे पर महान उपकार किया है। उन्होंने शॉल ओढ़ाकर डॉ. कोठारी का अभिनन्दन किया।

अनुवादक डॉ. कोठारी ने सबके प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अनुवादित कृति के साथ मैंने कितना न्याय किया है यह निर्णय तो पाठक ही बता पायेंगे। उन्होंने कहा कि प्रो. हम्पाजी ने 'चारू वसंता' का राजस्थानी में अनुवाद करने की स्वीकृति प्रदान कर मेरे प्रति जो विश्वास प्रकट किया उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूं। संचालन डॉ. सुभाष कोठारी ने किया जबकि धन्यवाद प्राकृत स्कालर्स सोसायटी के महासचिव डॉ. जिनेन्द्र जैन ने दिया।

अजमेर-हरिद्वार एक्सप्रेस उदयुपर से शुरू

उदयपुर। रेल प्रशासन द्वारा अजमेर-हरिद्वार-अजमेर त्रि-साप्ताहिक एक्सप्रेस रेलसेवा का विस्तार उदयपुर तक किया गया है। शुक्रवार को नई दिल्ली से रेल मंत्री सुरेश प्रभाकर प्रभु ने वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

शुभारम्भ समारोह में गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया सहित उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, हरिओमसिंह राठौड, सी.पी. जोशी, सुभाषचन्द्र बहेड़िया, विधायक फूलसिंह मीणा, नानालाल अहारी, अमृतलाल मीणा, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, युआई चेयमेन रवीन्द्र श्रीमाली तथा मंडल रेल प्रबंधक पुनीत चावला उपस्थित थे ।

जियोनी ने पेश किया ए1 प्लस

उदयपुर। अपने फ्लैगशिप मॉडल ए1 की रिकार्डतोड़ सफलता के बाद, जियोनी इंडिया ने बेजोड़ फोटोग्राफी व बैटरी अनुभव उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए ए1 प्लस पेश किया। आलोक श्रीवास्तव, डायरेक्टर - बिज़नेस इंटेलीजेंस एंड प्लानिंग, जियोनी इंडिया ने कहा कि अपनी श्रेणी की सर्वश्रेष्ठ विशेषताओं से सुसज्जित ए1 प्लस में 13 एमपी का रीयर डुअल कैमरा और 20 एमपी फ्रंट कैमरा लगा है। प्रदर्शन में शक्तिशाली ए1 प्लस में 4550 एमएएच बैटरी व 4 जीबी रैम, 64 जीबी रोम व 256 जीबी की एक्सपेंडेबल मैमोरी के साथ हेलियो पी 25 ऑक्टा-कोर प्रोसेसर लगाया गया है। ए1 प्लस भारत भर के रिटेल स्टोर्स में 26,999 रू. की कीमत में उपलब्ध होगा।

आलोक श्रीवास्तव ने कहा कि नया मॉडल अल्ट्राफास्ट चार्ज के साथ लम्बे समय तक चलने वाली बैटरी व अत्याधुनिक मीडिया टेक हेलियो पी25 प्रोसेसर के साथ-साथ प्रीमियम क्वालिटी फोटोग्राफी अनुभव के लिए शानदार डुअल रीयर कैमरे जैसी शानदार विशेषताएँ उपलब्ध कराता है। ए1 प्लस मीडिया टेक हेलियो परिवार की प्रीमियम प्रदर्शन वाली चिप, हेलियो पी25 के साथ उपलब्ध है, जो 16एनएम ऑक्टा-कोर प्रोसेसिंग की ताकत को बेहतरीन आईएसपी के साथ सम्मिश्रित करती है, जो डुअल कैमरा उपकरणों के लिए आदर्श है। इसे एंड्रायड स्मार्टफोन्स के लिए बनाया गया है, जिसका लक्ष्य असाधारण कैमरा विशेषताओं व सकल उन्नत तस्वीरों को और बेहतर बनाना है।

कुलदीप मलिक, कंट्री हैड, कारपोरेट सेल्स इंटरनेशनल, मीडिया टेक ने कहा कि हम जियोनी स्मार्टफोन्स के साथ उसकी ए सीरिज़ के जुड़ने में अत्यंत गर्व अनुभव कर रहे हैं। ए1 प्लस हेलियो पी 25 प्रोसेसर व 16एनएम ऑक्टा-कोर प्रोसेसिंग से संचालित होता है जिसमें डुअल कैमरा डिवाइस के साथ बेहतरीन आईएसपी लगाया गया है। इसका उद्देश्य श्रेष्ठ इमेज गुणवत्ता उपलब्ध कराके इसकी असाधारण कैमरा विशेषताओं के माध्यम से उत्पाद को अलग रूप देना है।

हिंदवेयर द्वारा वर्ष 2020 के लिए नई पहलकदमियों की घोषणा

उदयपुर। भारत की अग्रणी बाथरूम उत्पाद कंपनी हिंदवेयर ने 'स्टार्ट विद एक्सपर्ट' के साथ अपनी ब्रांड पहचान को नये अंदाज में पेश किया है। साथ ही कंपनी ने विशेषज्ञता का नया प्रतीक एचडब्लू भी पेश किया है। कंपनी ने अपने सुपर-प्रीमियम ब्रांड एल्काइमी को भी लॉन्च किया है, जिसे भारत के मशहूर डिजाइन मनीष मल्होत्रा ने डिजाइन किया है। यही नहीं, कंपनी ने विले पार्ले, मुंबई में अपने आधुनिकतम कॉन्सेप्ट स्टोर लकासा का भी उद्घाटन किया।

एचएसआइएल लि. के वीसीएमडी संदीप सोमानी ने बताया कि हिंदवेयर ने 20,000 से अधिक ग्राहकों और 100 आर्किटेक्ट्स पर एक शोध किया जिससे पता चला कि आधुनिक उपभोक्ता अपनी व्यस्त जिंदगी को आसान बनाने के लिए विशेषज्ञ की सलाह चाहते हैं।

आकर्षक प्रतीक 'एचडब्लू' बाथरूम्स में विशेषज्ञता का प्रतीक है और इसे 7 स्तंभों का समर्थन प्राप्त हैं, यानी एक्सपर्ट हेल्पलाइन जोकि विभिन्न भाषाओं में ग्राहकों के सवालों का जवाब देती है, ड्रीमबाथ एप्प 2.0 जोकि वास्तव में बनाये बगैर ऑक्युलस का इस्तेमाल कर बाथरूम को विजुअलाइज करने में मदद करता है, ड्रीमबाथ विजुअलाइजेश बुक में उत्कृष्ट बाथरूम्स थीम्स हैं, हिंदवेयर डिजाइन स्टूडियो-आधुनिकतम डिजाइन सेंटर, एक्सपर्ट वेबसाइट जोकि ग्राहकों को खूबसूरत बाथरूम थीम्स, समन्वित उत्पादों एवं विशेषज्ञ विषय-वस्तु में सहयोग करती है; एक्सपर्ट स्टोर्स श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ अनुभव मुहैया कराते है; और चुनिंदा स्टोर्स में विशेष रूप से प्रशिक्षित हिंडवेयर इन-स्टोर एक्सपर्ट्स।

जिंक़ को 'सोलर इनोवेशन एक्सीलेन्स अवार्ड'

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ की इकाई जिंक़ स्मेल्टर देबारी को सौर ऊर्जा क्षेत्र में नवाचार के लिए उत्कृष्टता सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार मिशन एनर्जी फाउण्डेशन के महानिदेशक अश्वीनकुमार खत्री ने जिंक़ के टीम लीड-रिन्वयूबल एण्ड सीडीएम विष्णु खण्डेलवाल एवं इलैक्ट्रीकल हेड-जिंक़ स्मेल्टर देबारी आर.एल. शर्मा को प्रदान किया। हिन्दुस्तान जिंक़ के हेड - कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि सौर ऊर्जा परियोजना विस्तार के तहत 115 मेगावाट के 16 प्लांट लगाये जा रहे हैं

कोलगेट स्कॉलरशिप ऑफर

उदयपुर। ओरल केयर क्षेत्र में बाजार की अग्रणी कंपनी कोलगेट-पामोलिव इंडिया लि. ने अपने वार्षिक कोलगेट स्कॉलरशिप ऑफर की शुरुआत की है। इसके तहत कोलगेट 52 लाख रुपये की 300 स्कॉलरशिप दी जायेगी ताकि बच्चे अपने सपनों को पूरा कर सकें। कोलगेट-पामोलिव इंडिया लि. के प्रबंध निदेशक इसाम बचलानी ने कहा कि कोलगेट का स्कॉलरशिप ऑफर 2009 में शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम ने अब तक 100 शहरों में 1000 से अधिक परिवारों को इतना सक्षम बनाया कि वे अपने बच्चों को उज्जवल भविष्य दे सकें। स्कॉलरशिप ऑफर में हिस्सा लेने के लिये कोई प्रोडक्ट खरीदना जरूरी नहीं है। जो लोग, कोलगेट डेंटल क्रीम (100 ग्राम या उससे अधिक) का पैक खरीदते हैं, उन्हें भी 999 रुपये की कीमत वाला, बीवाईजेयू का एक-माह का वीडियो ट्यूटोरियल सब्सक्रिप्शन मुफ्त मिलेगा। यह विद्यार्थियों के लिये एक एजुकेशन एप्प है, जिसे अपने मैथ्स और साइंस लेसन के लिये जाना जाता है। बीवाईजेयू रवींद्रन, संस्थापक एवं सीईओ बीवाईजेयू ने कहा कि बीवाईजेयू में हमारा मुख्य उद्देश्य हर किसी के लिये पढ़ाई को सुगम, प्रभावी, आकर्षक और व्यक्तिगत बनाना है। लर्निंग प्रोग्राम को, आजकल स्टूडेंट्स के पढ़ने का जो तरीका है उस अंतर को भरने के लिये और सही मायने में उसे किस तरह पढ़ा जाना चाहिये उसको ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है।

बर्न सर्जरी का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने भामाशाह योजना के अंतर्गत एक युवक की बर्न सर्जरी का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि रावतभाटा निवासी एक युवक के करंट लगने से सिर में गंभीर चोट आ गई थी जिसमें उसके सिर की चमड़ी निकल गई और हड्डी दिखाई देने लगी थी। साथ ही कंधे और पैर में भी चोट आई। इस पर परिजन उसे पीआईएमएस हॉस्पिटल लेकर पहुंचे।

यहां प्लास्टिक सर्जन डॉ. एम. पी. अग्रवाल को दिखाया। गंभीर घाव होने के कारण डॉ. अग्रवाल ने मरीज का तुरन्त उपचार प्रारंभ किया और प्लास्टिक सर्जरी ऑपरेशन द्वारा सिर के घाव और हड्डी को ढक दिया। इसके अलावा मरीज के बांए कंधे और बांए पैर की ऊंगलियों को भी प्लास्टिक सर्जरी द्वारा ठीक कर दिया। मरीज अब पूर्णतया स्वस्थ है।

फोर्ब्स इण्डिया टॉप 50 कम्पनी की सूची में हिन्दुस्तान जिंक़

उदयपुर। फोर्ब्स इण्डिया ने 50 शीर्ष भारतीय कंपनियों की सूची जारी की है जिसमें एकमात्र प्राकृतिक संसाधन

कंपनी के रूप में हिन्दुस्तान ज़िंक को शामिल किया गया है। फोर्ब्स इण्डिया ने हिन्दुस्तान जिंक़ पर प्रकाश डालते हुए अयस्क के फायदे, लागत पर नियंत्रण, अधुनातन टेक्नोलॉजी का उपयोग तथा त्वरित रूप से एकीकृत परिचालनों को अपनाना, कंपनी के मुख्य आकर्षण के रूप में केन्द्रित किया गया है।

हिन्दुस्तान जिंक़ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि हमारी मुख्य दक्षता लागत पर नियंत्रण और उत्पादन मात्रा में वृद्धि करना है। समय-समय पर भारत में जस्ता की खपत कई बार बढ़ी है। बुनियादी ढांचा, सौंदर्य प्रसाधन, दवाइयां, पेंट, रबर, सर्जिकल उपकरण, प्लास्टिक, वस्त्र, साबुन और बैटरी जैसे बाजारों में जस्ता के उपयोग के साथ ही विस्तार किया गया है।

माय वोडाफोन ऐप पर फुल टॉकटाईम

उदयपुर। राजस्थान में वोडाफोन के प्री-पेड उपभोक्ता माय वोडाफोन ऐप से 100 रु का रीचार्ज करने पर फुल टॉकटाईम का फायदा पा सकते हैं। सहज एवं अनुकूलित इंटरफेस के साथ अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म पर विकसित माय वोडाफोन एप पोस्ट-पेड एवं प्रीपेड उपभोक्ताओं तथा नॉन-वोडाफोन उपभोक्ताओं को भी व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करता है। वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि ऐप्स के कारण उपभोक्ताओं का जीवन दिन-बदिन आसान हो रहा है, वे इनके माध्यम से किसी भी उत्पाद को खरीद सकते हैं, सेवाओं के लिए सब्सक्राइब कर सकते हैं और खबरें/जानकारी पा सकते हैं। उपभोक्ताओं की बदलती ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए माय वोडाफोन एप को डिज़ाइन किया गया है जो हर यूज़र को व्यक्तिगत इंटरफेस का अनुभव देता है। माय वोडाफोन ऐप के कई और फायदे हैं, उपभोक्ता बिना इंटरनेट शुल्क के (भारत में) अपनी सुविधानुसार सप्ताह के सातों दिन चौबीसों घंटे इनका लाभ उठा सकते हैं। माय वोडाफोन ऐप आईओएस, एंड्रोइड और विन्डोज़ यूज़र के लिए उपलब्ध है और इसे एप्पल एवं गूगल प्ले स्टोर से मुफ्त डाउनलोड किया जा सकता है।

एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स, उदयपुर ने जीते पांच सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड

उदयपुर। होटलों एवं शाही शादियों के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रही एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर को विशिष्ठ श्रेणी में पांच अवार्ड प्राप्त हुए

हैं। नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में दिए गए 6 विशिष्ठ अवार्डों में से पांच अवार्ड एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स ने हासिल किए।

इंटरनेशनल कंवेशन ऑफ द वेडिंग फ्रटर्नीटी 2017 द्वारा ग्रेट इंडियन वेडिंग अवार्ड्स (जीवा) के तहत हाल ही में 21 से 23 जुलाई तक दिल्ली की होटल अंदाज (द हयात) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार में विश्व के प्रमुख 6 अवार्डों में से पांच अवार्ड्स पर एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर ने अपना वर्चस्व कायम किया।

सेमिनार में विश्व भर के प्रमुख होटलों एवं व्यवसाईयों के साथ उच्च स्तरीय चयन समिति भी थी। जिसमें बेस्ट वेडिंग होटल श्रेणी में एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की शिवनिवास पैलेस, उदयपुर को गोल्डन अवार्ड, फतहप्रकाशन पैलेस उदयपुर को भी गोल्डन अवार्ड, गजनेर पैलेस को ब्राउन्स अवार्ड, बेस्ट वेडिंग वेन्यू में सिटी पैलेस के ऐतिहासिक माणक चौक को गोल्डन अवार्ड तथा जगमंदिर आईलैण्ड पैलेस को सिल्वर अवार्ड प्राप्त हुआ। ये अवार्ड एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के जनरल मैनेजर इवेंट एवं सेल्स दशरथ सिंह राठौड़ ने प्राप्त किए। यह अवार्ड अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इवेंट्स मैनेजमेंट के ज्ञाता बेनी अविसार, इवेंट डिजाइनर कोलिन कोवि तथा एस चांद ग्रुप के दिनेश कुमार झुंझुनूंवाला ने प्रदान किए। उल्लेखनीय है कि एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर की सभी होटलें अतिथि देवो भव: के मूल मंत्र पर कार्य करती है। इसके साथ ही ग्रुप के चेयरमेन अरविन्द सिंह मेवाड़ के दिशानिर्देश पर जीवंत विरासत संरक्षण में भी अपना संपूर्ण योगदान दे रही है।

लोकदेवता कल्लाजी.....

(पृष्ठ दो का शेष)

फूलपुर से उजड़ा कल्लाजी का वह धाम उसके पास ही वलाद गांव में 'काली कल्ला धाम' नाम से स्थापित किया गया। कल्लाजी का यह धाम बड़ा ही चमत्कारी, प्रभावी तथा प्रतापी परचों वाला है। दर्शनार्थियों, दुखियारों का यहां आना-जाना बना ही रहता है। नवरात्रि में यहां नौ ही दिन मेला लगा रहता है। डॉ. सुधा गुप्ता के साथ मेरा सर्वप्रथम यहीं आना-जाना प्रारंभ हुआ। बापूजी के निधन के पश्चात यहां की गादी उनके सुयोग्य पुत्र अनिलकुमार ने संभाली और विकास के नव्य-भव्य सोपान दिये।

बापूजी सोते-जागते, उठते-बैठते, हर समय मालिक को ही हृदयस्थ किये रहे। उन्होंने कईबार कइयों की बीमारी अपने में लेकर उनकी मांदगी स्वयं झेली। भयंकर से भयंकर बुखार में भी उन्होंने मालिक की गादी नहीं छोड़ी। अंतिम घड़ी में भी वे स्फूर्ति, ताजगी और तत्परता से अथक कार्य करते रहे। उनकी कार्यशैली, प्रज्ञा और मनीषा असाधारण थी। बापूजी की सेवाओं के फलस्वरूप उन्हें अखिल भारतीय कल्ला सम्प्रदाय का सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया। वे 'अ.भा. गोरक्षक राष्ट्रीय संत शिरोमणि' की उपाधि से भी सम्मानित किये गये। उन्होंने कईबार अनमोल वचन दिये। हरजस उच्चरित किये और दिव्य वाणी का प्रसाद दिया।

बापूजी की यह विशेषता थी कि गादी पर बैठ अतरलगी दोनों हथेलियों को मिलाकर वेग से वेगतर होते ऐसी रगड़ी देते कि चरम स्थिति होते ही चमत्कारी ढंग से देवता का उनके शरीर में पदार्पण हो जाता। वे शक्ति अर्थात् तलवार द्वारा उसके स्पर्श से इलाज करते। देवता के पदार्पण पर उनकी आँखें सामान्य नहीं होकर असाधारण रूप से स्थिर तथा अपलक हो जातीं जो गादी के अंत तक वैसी ही बनी रहतीं।

वे लगातार आठ-आठ घंटे तक समग्र रूप से अपने सरजुदास को अलोप करते हुए कल्लाजीमय बने रहते। उन्हें उस दौरान अपनेपन का कोई भान-ध्यान नहीं रहता। कल्लाजी देह में तथा बापूजी विदेह हुए रहते। देह-विदेह की ऐसी अवस्था यात्रा-काल में भी मुझे हर समय, अनेकों बार देखने को मिली।

एकदिन सुधाजी ने मुझे बापूजी सरजुदासजी के हाथ का लिखा कागज दिया जो मेरे पास पता नहीं कैसे संभला हुआ है। यह मेरे नाम उन्होंने किस प्रसंग में लिखा, मुझे ज्ञात नहीं किंतु इसे भी मैं प्रकारान्तर से सरजुदासजी के माध्यम से कल्लाजी बावजी का प्रसाद मानता हूं। वलाद में लिखा 'संघर्ष का सिपाही डॉ. महेन्द्र भानावत' नामक शीर्षक वाला वह महत्वपूर्ण आशीषा-लेख इस प्रकार है-

डॉ. महेन्द्र भानावत मेवाड़ के छोटे से गांव कानोड़ में पैदा हुए। उनका जीवन बाल्यकाल से ही विडम्बना के थपेड़ों से गुजरा। भानावत से मेरा सम्पर्क लगभग पन्द्रह वर्षों से चल रहा है। कई यात्राएं उनके सम्पर्क में हुई। मैंने इनके जीवन को बहुत बारीकी से देखा है। इनके जीवन में तामस कम, सरलता ज्यादा पाई। भानावत कलम के भी धनी हैं। उनका सारा जीवन लोकसम्पर्क में बीता। कई सालों से लोककला मंडल से जुड़े हुए हैं। छोटे से छोटे लोगों से मिलना, उनके जीवन पर प्रकाश डालना, उनके दुख सुख की जीवनी को अपनी कलम से ढालना उनकी विशेषता है।

दौलत और दंभ उनके जीवन से कोसों दूर है। कई कवियों की कविताएं, निबंध, कहानियां हमने पढ़ी हैं लेकिन भानावत की शैली हिन्दुस्तान के गरीबों के लिए एक मिशाल है। इन्होंने मेरे साथ निर्भय मीरां की खोज में अपना घर, अपनी स्थितियां सब एक तरफ रखकर नगर-नगर, पहाड़-पहाड़ की खाक छानी है और मीरां की वास्तविकता जन के सामने रखी है। मैं हृदय से भानावतजी को आशीर्वाद देता हूं कि उनका अंतिम जीवन इसी तरह लोगों की सेवाओं में बीते।

अपने संत-स्वभाव के कारण सरजुदासजी सबके लोकप्रिय बने रहे। परिचित-अपरिचित जो भी उनसे मिलता, सबके साथ अति आत्मीयता और सहज भाव से मिलते। उनकी वाणी में मिठास और व्यवहार में मृदुता थी। 24 अक्टूबर 2005 को आसपुर में वे ब्रह्मलीन हुए तब मां विजवादेवी के सम्मुख हवनकुंड में उनकी अंत्येष्टि की गई। गुजरात वागड़ तथा मेवाड़ में ही नहीं, अन्य प्रांतों में भी उनके कई श्रद्धालु-भक्त थे। मुंबई में भी उनको चाहनेवाले, कल्लाजी के अनन्य भक्त उन्हें आमंत्रित करते रहते थे। एकबार जो भी उनके संपर्क में आ जाता, वे उन्हें भूलते नहीं और उनकी सार संभाल लेते रहते। सबके बीच वे मालिक जैसा ही सत्कार-सम्मान पाते।

अपने जीवनकाल में वे हर समय मालिक, कल्लाजी बावजी का ही स्मरण किये रहते। मालिक की कृपा से उन्हें हर तरह का ज्ञान था। सभी तरह की जानकारी के वे कोश थे। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए बांसवाड़ा के मंदारेश्वर स्थित मंदिर प्रांगण में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई। मंदारेश्वर जनसेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रेमकांत जोशी द्वारा दिव्य भारत पंड्या के आचार्यत्व तथा ध्यान योगी उत्तम स्वामी के सान्निध्य में स्थापित वीर शिरोमणि संत सरजुदासजी की प्रतिमा-स्थापना महोत्सव में अनेक साधु-संतों तथा भक्त-श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

कान्यो मान्यो

लाद, लींडा, मींगणा रौ सांच

कान्या ने विचार मांय पड़तां मान्यो बोल्यो, आज घणो ऊंडै सोच में पड़ग्यो। असी कई जोखम भरी वात है। कान्या रो ध्यान टूट्यो जदी बोल्यो कै काल एक भजन सुण्यो जंडी एक लैण रेई-रेई नै म्हनै हचकोळा दैय री है। भजन हो, 'जोबन धन पामणो दन चारां' नै लैण ही, 'नर थारी खाळ कछु काम न आवै बळ जळ भई अंगारा।'

मान्यो बोल्यो, लैण तो सौ टका टंच जाणै अमरत री खान सूं लायो। खाळ ई क्यूं, केई जानवरां री तो बोटी-बोटी ने हाड़क्यां तळक काम आवै। गायां-भैंयां रौ तो गोबर घणो कीमती। खेतां मांय खाद बणै। कई रोग मेटै। कान्यो बात काट बोल्यो, आपणे राष्ट्र रौ तो गोबर ई धन है।

मान्यो आपणी वात चालू कीधी, बोल्यो, ताव तेजरा आया मनख नै कैणी सुणाय, मोरां पाछै ऊंट रा मींगणा फैंक जदी वो भागे ज्यूं वंडो ताव भागता म्हैं देख्यो। बोकड़ा-बोकड़ी री मींगण्या भी काम आवै। कान्यो बोल्यो, म्हारे गाम में गब्बू भुवा तो ऊंदरा री मींगण्यां नै पाणी हांडै घिस नै वो घोळ फोड़ा फुंस्या माथै लगावती।

मान्यो बोल्यो, घोड़ा-गधा री लीद घणी काम री। गारा में लीद मिलाय वीनै चीकणो करै जो घर लींपवा, रा-गोबर देवा नै कोठा-कोठी बणावा में काम आवै। हाथी रो लींडो घर में राखवाऊं माछर नै माकण भाग जावै। मान्यो हां में हां मलावतो्यौ। बोल्यो कै कबूतरा री पीठ घणी गरमास राखै। कंडो बाळतोण वै जावै तो कबूतरा री पीठ लगावाऊं आराम पड़ जावै।

कान्यो बोल्यो, कठाऊं सरु व्या जो कठै पोंचग्या। खोजबीन करवाऊं केई तरै री जाणकारी मिलै। लोक मांय ग्यान सब आड़ी बिखर्‌यो थको है। ग्यान री कमी नीं है। हालतांई जा वात सुणी वा या है कै गडूरो, गंडक, मिनकी न मनख जात रौ गू कई काम नी आवै पण अबै नवा जमाना मांय बाल री खाळ काढ़वावाला नवी-नवी खोजां में लागर्‌या है। काले सुणवाने मलै कै टट्टी-पेशाब भी घणो काम रो है तो अचरज नीं।

बाइक स्टूडियो का शुभारंभ

उदयपुर। साइकिल के प्रति उत्साह और लगाव रखने वालों को विश्वस्तरीय साइकिल्स उपलब्ध करवाने के लिए अत्याधुनिक साइकिलों के शोरूम,

बाइक स्टूडियो का शुभारंभ सोमवार को शोभागपुरा में किया गया। शोरूम का उद्घाटन श्रीचंद डेम्बला ने किया। इस शो रूम में 3,500 से लेकर 3 लाख तक की कीमत की अत्याधुनिक साईकिल्स उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में श्रीचंद डेम्बला ने बताया कि वर्तमान में कम्पनी के पूरे भारत में 9 शो रूम हैं जबकि राजस्थान में जयपुर और जोधपुर के बाद उदयपुर में यह तीसरा शोरूम है। शीघ्र ही चौथा शोरूम कोटा में स्थापित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि पहले साईकिल का इस्तेमाल एक से दूसरी जगह पर आने-जाने और सामान लाने ले जाने के लिए किया जाता था लेकिन आजकल उसकी जगह बाईक और अन्य साधनों ने ले ली है।

अब तो युवा और बुजुर्ग साईकिलों का उपयोग सिर्फ एक्सरसाईज और शोकियाना तौर पर करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए इन साईकिलों के फीचर भी रखे गये हैं। उन्होंने बताया कि कम्पनी की बेल्जियम में फैक्ट्री है। इसमें 10 लाख तक की साईकिल का भी निर्माण होता है लेकिन वह डिमाण्ड के आधार पर ही उपलब्ध करवाई जाती है। उन्होंने बताया कि ग्राहकों की डिमाण्ड और उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए कुछ समय बाद फाईनेन्स सुविधा भी प्रारम्भ करने के प्रयास करेंगे।

इस फ्रेंचाइचीज के मालिक संजय डेम्बला ने बताया कि बाइक स्टूडियो का लक्ष्य सभी आयु वर्ग के लोगों को साइकिल चलाने के प्रति प्रोत्साहित करना है। यहां बच्चों, युवाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशद् श्रंखला में साइकिल्स उपलब्ध होंगी। शोरूम में सर्विस एरिया का प्रावधान रखा गया है। गुणवत्ता का यह भाग थाईलैण्ड की साइकिल निर्माता कम्पनी एल ए साइकिल्स का हिस्सा है। शोरूम में उच्च स्तरीय ब्राण्ड जैसे फरारी एवं लेम्बोर्गिनी, रेसिंग साइकिल्स, राइडिंग साइकिल्स, बच्चों के लिए एंग्री बर्ड्स साइकिल्स, स्नो साइकिल्स इत्यादि उपलब्ध होंगी।

फ्रेंचाइचीज के मैनेजर नितिन घई ने बताया कि यह एक विशेष आउटलेट होगा जहां सभी प्रकार की साइकिल्स, स्पेयर पार्ट्स, साइकिलिंग एसेसरीज और सर्विस एक ही छत के नीचे उपलब्ध हो सकेगी।

उन्होंने बताया कि ला सोवेरियन एक शीर्ष ब्राण्ड है जो माउन्टेन, जर्ड, बीएमएक्स, एमटीबी के साथ ही अन्य उत्पादों की पेशकश देता है। कम्पनी को उसके त्रुटि रहित निर्माण और बच्चों के लिए डिजाइन तथा रोड साइकिल्स के लिए जाना जाता है। कम्पनी पूरे देश में साइकिल चालन को प्रोत्साहन देने के लिए बाइक मेनिया जैसे आयोजन भी करती है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/
मसखरी	199/
लोकदेवता कल्लाजी	15/
अजूबा राजस्थान	60/
कोई--- कोई औरत	15/
मरवण मांडे मारणा	25/
संस्कृति के रंग	25/
लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति	15/
मेंहदी राचणी	25/
आछी करणी पार उतरणी	20/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

Admission Open

2017-18

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

Courses Offered

M.B.B.S. (4.5 Years + 1Year Internship)

Eligibility – 12th pass in science (PCB)& NEET qualified.

M.Sc. in Medical (3 Years)

Branches:

Anatomy Biochemistry
Physiology Microbiology

Eligibility - MBBS, BDSm, B.V.Sc. & Ah, B.P.T./B.O.T./ B.A.S.L.P., B. Pharma, B.Sc. (Home Sci.), & B.Sc. (Bio). BHMS, BAMS, B.Sc. (Medical), B.Sc. (Biotech), Candidate must have secured 50% marks, (40% incase of SC|ST|OBC|SBC & 45% for PH)

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING*

Courses Offered

B.Sc. Nursing (4 Years)

Eligibility - 12th pass with science (PCB) & English with minimum 45% marks.

M.Sc. Nursing (2 Years)

Branches :

Medical Surgical Community Health
Obstetrics & Gynecological Pediatric /Child Health
Psychiatric Nursing/Mental Health

Eligibility - B.Sc. Nursing, B.Sc. Hons. Nursing P.B.B.Sc. Nursing with minimum 55% marks.

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING

Courses Offered

G.N.M. (3 Years)

Eligibility - 12th pass with any discipline minimum 40% marks

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

Courses Offered

B.P.T. (4.5 Years)

Eligibility - 12th Science (Biology) with 45% Marks

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY

Courses Offered

D.Pharma (2 Years)

Eligibility – 12th pass in science (PCB)

FACILITY 600 Bedded Hospital Hostel, Bus & Scholarship

*Subject to INC Approval

Ambua, Road, Umarda, Udaipur-313015 (Raj.) | Phone : 0294-3010000-15, 9116132821, 9587890082

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।